एम0ए0 हिन्दी, सी0बी0सी0एस0 आधारित पाठ्यक्रम–2020

Part	Semester	Paper Code	Paper Title	Credit	Inter mark	Inter mark
1.	I Semester	HINC-01	प्राचीन तथा भक्तिकालीन हिन्दी काव्य	4	30	70
		HINC-02	रीतिकालीन हिन्दी काव्य	4	30	70
		HINC-03	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरम्भ से रीतिकाल तक	4	30	70
		HINC-04	हिन्दी साहित्य का इतिहास (भारतेन्दु युग से आज तक)	4	30	70
		HINDSE-01	मीराबाई	4	30	70
		HINDSE-02	मध्यकालीन हिन्दी का नीतिकाव्य	4	30	70
		HINGEC-01	हिन्दी भाषा का व्यावहारिक स्वरूप	4	30	70
			I[st] Semester Total	24		
2.	II Semester	HINC-05	भारतीय काव्यशास्त्र	4	30	70
		HINC-06	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4	30	70
		HINC-07	नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ	4	30	70
		HINC-08	हिन्दी कथा साहित्य	4	30	70
		HINDSE-03	लखनऊ के हिन्दी लेखक और कथाकार	4	30	70
		HINDSE-04	लखनऊ के कवि एवं नाटककार	4	30	70
		HINGEC-02	हिन्दी का सर्जनात्मक साहित्य	4	30	70
			II[nd] Semester Total	24		
3.	III Semester	HINC-09	आधुनिक काव्य (छायावाद तक)	4	30	70
		HINC-10	छायावादोत्तर काव्य	4	30	70
		HINC-11	विशिष्ट कवि एवं रचनाकार	4	30	70
		HINC-12	विशिष्ट अध्ययन	4	30	70
		HINDSE-05	दलित विमर्श एवं दलित साहित्य	4	30	70
		HINDSE-06	अद्यतन हिन्दी साहित्य	4	30	70
		HINSEC-01	प्रयोजनमूलक हिन्दी	4	30	70
			III[rd]Semester Total	24		
4	IV Semester	HINC-13	हिन्दी आलोचना साहित्य	4	30	70
		HINC-14	हिन्दी भाषा एवं भाषा विज्ञान	4	30	70
		HINC-15	लघुशोध प्रबन्ध (न्यूनतम 100 पृष्ठ) और उस पर आधारित मौखिकी परीक्षा	4+4=8	30	70
		HINDSE-07	स्त्री विमर्श और हिन्दी साहित्य	4	30	70
		HINDSE-08	आधुनिक भारतीय साहित्य (हिन्दी में अनूदित रचनाओं पर आधारित)	4	30	70
		HINSEC-02	हिन्दी पत्रकारिता और संपादन कला	4	30	70
			IV[th]Semester Total	24		

नोटः प्रत्येक सेमेस्टर में HINDSE- पाठ्यक्रम में किसी एक का चयन करना होगा।

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग

एम0ए0 हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
एम0ए0 हिन्दी, सी0बी0सी0एस0 आधारित पाठ्यक्रम–2020

- एम0ए0 हिन्दी प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम सी0बी0सी0एस0 प्रणाली पर आधारित है।
- **प्रथम सेमेस्टर** कोर 1 से 4 तक हिन्दी काव्य एवं इतिहास की परम्परा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम है।
- डी0एस0ई0–1 और 2 मीराबाई स्त्री संवेदनशीलता के लिए तथा मध्यकालीन हिन्दी का नीतिकाव्य छात्रों में नैतिकता की अभिवृद्धि के लिए रखा गया है।
- जी0ई0सी0–1 हिन्दी भाषा का व्यावहारिक स्वरूप छात्रों में भाषा ज्ञान कराने के लिए रखा गया है जिसका आज के प्रतियोगी परीक्षाओं में इसकी व्यावहारिक उपयोगिता है।
- **द्वितीय सेमेस्टर** कोर 5 से 8 तक भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र में साहित्य के सैद्धान्तिकी से परिचय प्राप्त होगा। इसी के साथ नाटक एवं अन्य गद्यविधाओं का विकासात्मक परिचय प्राप्त होगा।
- डी0एस0ई0–3–4 में लखनऊ के कवि और नाटककार तथा कथाकारों के साहित्य को सम्मिलित किया गया है जिससे कि लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष में स्थानीय साहित्यकारों के स्तरीय लेखन को समाहित करके उन्हें सम्मान मिल सके।
- जी0ई0सी0–2 हिन्दी का सर्जनात्मक साहित्य छात्रों में रचनात्मक क्षमता को बढ़ायेगा इस उद्देश्य से इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।
- **तृतीय सेमेस्टर** कोर–9–12, में छायावाद, छायावादोत्तर विशिष्ट कवि एवं विशिष्ट अध्ययन साहित्य के वृहत्तर आयाम को स्पर्श करता है।
- डी0एस0ई0–5–6, दलित विमर्श और अद्यतन हिन्दी साहित्य पर केन्द्रित है। सामाजिक संरचना और सौहार्द की दृष्टि से और लोकतंत्रात्मक सरोकार की दृष्टि से इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। इसकी मांग राष्ट्रव्यापी है।
- एस0ई0सी0–01 प्रयोजनमूलक हिन्दी की उपादेयता विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने बहुत पहले अनुभव करके पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। प्रशासनिक और रोजगारपरक क्षेत्र में जाने के लिए इस पाठ्यक्रम को इसके अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।
- **चतुर्थ सेमेस्टर** कोर 13–14 में आलोचना और हिन्दी भाषा विज्ञान पूर्व पाठ्यक्रम में रहा है। इसे और अधिक अद्यतन बनाकर प्रस्तुत किया गया है। कोर 15 लघुशोध प्रबन्ध पर है।
- डी0एस0ई0–7–8 स्त्री विमर्श और भारतीय साहित्य (अनूदित रचनाओं पर केन्द्रित) है। इसकी उपादेयता भी राष्ट्रीय स्तर की है। राष्ट्र के भावैक्य के लिए इसकी सामायिकता है।
- एस0ई0सी0–02 हिन्दी पत्रकारिता और सम्पादन कला, शीर्षक पाठ्यक्रम छात्रों के रोजगार की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार एम0ए0 हिन्दी के चारों सेमेस्टर के पाठ्यक्रम सी0बी0सी0एस0 प्रणाली पर आधारित हैं। यह साहित्य के विविध पक्षों को समाहित किये हुए हैं, अद्यतन है लोकोपयोगी है, रोजगारपरक है और नैतिक मूल्यों से युक्त है।

पाठ्यक्रम ! (पृ० 01 - 37)

26/02/2020   26/02/2020   26.02.2020   26/2/2020

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय

एम. ए. (हिन्दी) प्रथम सेमेस्टर

HINC-01 **प्रथम प्रश्न पत्र : प्राचीन तथा भक्तिकालीन हिन्दी काव्य**

निर्धारित पाठ्क्रम–

1. चन्द्रवरदाई–पद्मावती समय
2. रैदास–रैदास बनी–संपा0 डॉ0 शुकदेव सिंह (राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली)
   निर्धारित अंश–संपूर्ण साखियाँ (कुल 14) तथा पद संख्या–17, 22, 25, 37, 48, 62, 65, 68, 98, 133 (कुल 10 पद)
3. कबीरदास–कबीर ग्रन्थावली–संपा0 श्यामसुन्दरदास (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
   निर्धारित अंश– गुरुदेव को अंग, सुमिरन की अंग, बिरह को अंग, ग्यान विरह को अंग।
4. मलिक मुहम्मद जायसी–जायसी ग्रन्थावली–संपा0 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
   निर्धारित अंश–सिंहलद्वीप खण्ड, मानसरोदक खण्ड, नखशिख खण्ड, नागमती वियोग खण्ड।
5. सूरदास–भ्रमरगीतसार–संपा0 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
   निर्धारित अंश (पद संख्या 51 से 150 तक)
6. तुलसीदास– रामचरितमानस (गीता प्रेस, गोरखपुर)
   निर्धारित अंश (उत्तरकाण्ड : दोहा संख्या 20 से अंत तक)

इकाई - 1 चन्दवरदाई, रैदास, कबीरदास के निर्धारित अंशों की व्याख्या।

इकाई - 2 जायसी, सूरदास, तुलसीदास के निर्धारित अंशों की व्याख्या।

इकाई - 3 चन्दवरदाई और रैदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई - 4 कबीर और जायसी पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई - 5 सूरदास और तुलसीदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।

सहयोगी अध्ययन ग्रन्थ –

1. पृथ्वीराज रासो एक समीक्षा– डॉ0 बिपिन बिहारी त्रिवेदी
2. पृथ्वीराज रासो के पात्रों की ऐतिहासिकता–डॉ0 कृष्ण चन्द्र अग्रवाल
3. पृथ्वीराज रासो में लोकतत्त्व–प्रो0 परशुराम पाल
4. कबीरदास–डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. कबीर मीमांसा– डॉ0 रामचंद्र तिवारी
6. सूरदास–डॉ0 हरवंशलाल शर्मा
7. लोकवादी तुलसीदास –डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी
8. जायसी–डॉ0 विजयदेवरानायण शाही
9. हिन्दी साहित्य भाग–1, डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा।
10. संत काव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन– प्रो0 वासुदेव सिंह

HINC-02 द्वितीय प्रश्न पत्र : रीतिकालीन हिन्दी काव्य

निर्धारित पाठ्क्रम– रीतिकाव्यधारा– संपादक : डॉ0 रामचन्द्र तिवारी/डॉ0 रामफेर त्रिपाठी

1. केशवदास– छन्द संख्या–1, 2, 3, 5, 17, 22, 29, 31, 47, 54, 56, 57, 59, 62, 65,
2. बिहारी–दोहा संख्या–1, 2, 4, 10, 12, 14, 15, 16, 17, 21, 22, 27, 28, 31, 32, 33, 38, 39, 44, 46, 48, 50, 53, 59, 60, 63, 66, 69, 70,
3. भूषण–छन्द संख्या–1, 3, 5, 7, 9, 11, 15, 18, 19, 20, 21, 23, 26, 31, 33,
4. देव–छन्द संख्या–2, 3, 6, 8, 10, 14, 19, 26, 28, 33, 39, 40, 43, 48
5. घनानन्द–छन्द संख्या–1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 15, 16, 19, 22
6. पद्माकर– छन्द संख्या–1, 2, 4, 5, 6, 8, 9, 10, 11, 14, 20, 21, 25, 26

इकाई – 1 केशवदास,बिहारी, भूषण के निर्धारित अंशों से व्याख्याएँ।

इकाई – 2 देव, घनान्द और पद्माकर के निर्धारित अंशों से व्याख्याएँ।

इकाई – 3 केशवदास और बिहारी पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई – 4 भूषण और देव पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।

इकाई – 5 घनान्द और पद्माकर पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।

सहयोगी अध्ययन ग्रन्थ –

1. हिन्दी साहित्य का अतीत–डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
2. रीतिकालीन कवियों की देन–डॉ0 किशोरीलाल
3. रीतिकाव्य की भूमिका– डॉ0 नगेन्द्र
4. रीतिकाव्य (संग्रह) –डॉ0 जगदीश गुप्त

अनिवार्य

HINC-03 **तृतीय प्रश्न पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरम्भ से रीतिकाल तक)**

इकाई – 1 इतिहास दर्शन, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा, काल विभाजन और नामकरण।

इकाई – 2 इकाई साहित्य का आदिकाल, नामकरण, प्रवृत्तियाँ, नाथ-सिद्ध साहित्य, रासो काव्य परम्परा, आदिकाल के प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ।

इकाई – 3 भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका योगदान, प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य धारा की सामान्य विशेषताएँ।

इकाई – 4 भक्तिकालीन सगुणधारा, रामभक्तिशाखा, कृष्णभक्तिशाखा, रामभक्तिशाखा और कृष्णभक्तिशाखा के प्रमुख कवि और काव्यग्रंथ।

इकाई – 5 रीतिकाल की कालसीमा और नामकरण, लक्षण ग्रंथों की परम्परा, रीतिकालीन काव्यधाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त) तथा प्रवृत्तियाँ , प्रतिनिधि रचनाकार और विशेषताएँ।

सहयोगी अध्ययन ग्रन्थ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास–डॉ0 रामकुमार वर्मा
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास--संपादक, डॉ0 नगेन्द्र
4. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास– डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास–डॉ0 बच्चन सिंह
6. हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका, भाग--1,2, – प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित

अनिवार्य

HINC-04 **चतुर्थ प्रश्न पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास (भारतेन्दु युग से आज तक)**

इकाई – 1 आधुनिकता, आधुनिकीकरण, आधुनिकतावाद, आधुनिकता की प्रवृत्तियाँ।

इकाई – 2 आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भारतेन्दु युग : विशेषताएँ, प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ, द्विवेदी युग : विशेषताएँ, प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ।

इकाई – 3 छायावाद युग की प्रवृत्तियाँ, प्रमुख साहित्यकार और रचनाएँ, प्रगतिवाद और नई कविता की विशेषताएँ।

इकाई – 4 हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएँ – नाटक, उपन्यास, निबन्ध, कहानी का विकास।

इकाई – 5 हिन्दी आलोचना, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा और रिपोर्ताज का विकास।

सहयोगी अध्ययन ग्रन्थ –

1. आधुनिक हिन्दी का आदिकाल–श्री नारायण चतुर्वेदी
2. हिन्दी का गद्य–साहित्य–डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
3. छायावाद–डॉ0 नामवर सिंह
4. हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका भाग–3, –प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित

HINDSE-01 मीराबाई

निर्धारित पाठ्यक्रम :

1. मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी

इकाई–I : व्याख्या : प्रथम पचास पद

इकाई–II : व्याख्या : शेष पचास पद

इकाई–III : मीरा की काव्यवस्तु पर आधारित दीर्घ प्रश्न

इकाई–IV : मीरा की काव्यभाषा एवं काव्यशिल्प पर आधारित दीर्घ प्रश्न

इकाई– V : मीरा के प्रमुख आलोचक और आलोचना–शिव कुमार मिश्र, विश्वनाथ त्रिपाठी, मैनेजर पाण्डेय, रोहिणी अग्रवाल आदि पर आधारित प्रश्न।

सहयोगी अध्ययन ग्रन्थ –

1. मीरा का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास– डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. भक्तिकाव्य और लोकजीवन–शिवकुमार मिश्र

HINDSE-02 मध्यकालीन हिन्दी का नीति काव्य

निर्धारित पाठ्यक्रम

(क) कबीरदास – 30 दोहे

कबीर ग्रन्थावली, सम्पादक– श्यामसुन्दर दास, प्रकाशक– नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी,

गुरुदेव का अंग–22, सुमिरन को अंग–10, चितावणी को अंग– 9,12,13, 27,34, 54, 55, मन को अंग– 27, माया को अंग–11, चाँणक को अंग–8, कथनी बिना करनी को अंग–4,

कामी नर को अंग–3, भेष को अंग– 12, कुसंगति को अंग–2,7, संगति को अंग–7, साधु को अंग–1, साधु महिमा को अंग–1, उपदेश को अंग–9, बेसास को अंग–10, सूरातन को अंग– 21, काल को अंग–14, 19,25, पारिख को अंग–1,2,3, निन्दा को अंग–3

(ख) गोस्वामी तुलसीदास –30 दोहे

दोहावली– गीता प्रेस, गोरखपुर

दोहा संख्या– 52, 54,103, 185, 271, 318, 332, 333, 337, 338, 341, 344, 347, 352, 357, 364, 369, 372, 376, 378, 386, 388, 400, 401, 404, 414, 421, 429, 437, 444

(ग) रहीम – 30 दोहे

रहीम ग्रन्थावली, सम्पादक–विद्यानिवास मिश्र, गोविन्द रजनीश, वाणी प्रकाश, दिल्ली।

दोहा संख्या– 5, 6, 7, 20, 25, 32, 33, 35,43, 46, 47, 49, 59, 62, 67, 68, 74, 79, 81, 82, 84, 85, 93, 109, 178, 184, 193, 211, 215, 249।

(घ) वृन्द – 30 दोहे

हिन्दी काव्य गंगा, सम्पादक–सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

दोहा सख्या – 1, 2, 3, 5, 6 ,7, 8, 9, 10, 12, 13, 15, 16, 17, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 31, 32, 35, 36, 38, 39,

(ङ) गिरिधर कविराय – 10 छन्द

हिन्दी काव्य गंगा, सम्पादक–सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी बिहरी रत्नाकर

छन्द संख्या – 1, 5, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14

(च) बिहारी– 30 दोहे

बिहारी रत्नाकर–संपादक–जगन्नाथ दास रत्नाकर, रत्ना पब्लिकेशन वाराणसी

दोहासंख्या –38, 51, 59, 141, 151, 181, 191, 192, 228, 235, 251, 255, 271, 274, 300, 303, 311, 321, 331, 351, 357, 381, 396, 429, 432, 434, 435, 437, 438, 584

इकाई –एक – कबीरदास, तुलसीदास के निर्धारित काव्यांशों से व्याख्याएँ

इकाई– दो – रहीम, वृन्द के निर्धारित काव्यांशों से व्याख्याएँ

इकाई– तीन – बिहारी, गिरिधर कविराय के निर्धारित काव्यांशों से व्याख्याएँ

इकाई– चार – कबीरदास, तुलसीदास, रहीम पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न

इकाई– पाँच – वृन्द, बिहारी, गिरिधर कविराय पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न

सहयोगी अध्ययन ग्रन्थ –

1. मध्ययुगीन काव्य साधना–डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
2. बिहारी की वाग्वविभूति–बिहारी, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
3. तुलसी काव्य मीमांसा–डॉ0 उदयभानु सिंह
4. लोकवादी तुलसी–विश्वनाथ त्रिपाठी
5. हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका–भाग–2, प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित

HINGEC-01 हिन्दी भाषा का व्यावहारिक स्वरूप

इकाई -1 हिन्दी भाषा का उद्भव-विकास : भाषा की परिभाषा, प्रकृति तथा विशेषताएँ, हिन्दी भाषा के विविध रूप – सर्जनात्मक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्कभाषा।

इकाई – 2 देवनागरी लिपि का परिचय एवं विकास, हिन्दी व्याकरण का सामान्य परिचय - शब्द निर्माण, वाक्यांग परिचय।

इकाई – 3 हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति, पारिभाषिक शब्दावली – मानविकी, समाज विज्ञान एवं विज्ञान विषयक।

इकाई – 4 कार्यालयी पत्राचार, हिन्दी का मानकीकरण, बाजार और हिन्दी, हिन्दी की वैश्विकता।

इकाई – 5 कम्प्यूटर में हिन्दी का अनुप्रयोग, इंटरनेट साधित हिन्दी – परिचय और विकास

सहयोगी अध्ययन ग्रन्थ –

1. हिन्दी भाषा उद्भव, विकास और रूप–हरदेव बाहरी
2. हिन्दी भाषा–डॉ0 कैलाशचन्द्र भाटिया
3. राजभाषा हिन्दी–डॉ0 भोलानाथ तिवारी
4. प्रयोजनी हिन्दी–प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित